स्नातकोत्तर महाविद्यालय बॉसडीह, बलिया
युगधारा के मासिक अंश

मास अप्रैल 2024

हम अपने महाविद्यालय के मासिंक समाचार–पत्र (माह–अप्रैल) को प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। हमारा यह विश्वास है कि हमारे प्राध्यापक व विद्यार्थी गण अपनी भागीदारी व अपने अनुभव साझा कर इस पत्र के गौरव को बढ़ाने में सहायक होंगे.........

मध्यावधि (मिडटर्म) परीक्षाओं का आयोजन

बी0ए0 व एम0ए0 के सभी सेमेस्टर की मध्यावधि परीक्षाएं दिनाक 5 अप्रैल से 10 अप्रैल के मध्य कराई गई। प्राचार्य/केन्द्राध्यक्ष डॉ0 फिरोज खान ने बताया कि विश्वविद्यालय के निर्देशानुसार सम–सेमेस्टर (स्नातक व परास्नातक) के विद्यार्थियों के आंतरिक मूल्यांकन के क्रम में मध्यावधि (मिडटर्म) परीक्षाएं महाविद्यालय मे प्रायोजित की गई। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुपालन के पश्चात् विद्यार्थियों के आन्तरिक मूल्यांकन हेतु पूर्णांक 25 अंक के सापेक्ष यह परीक्षा प्रत्येक विषय में कराई जाती है, जिसके प्राप्तांक मुख्य परीक्षाफल में संयुक्त किये जाते हैं।

बी0एल0एड्0 स्थायी मान्यता हेतु निरीक्षण

इण्टरमिडियेट उतीर्ण विद्यार्थियों हेतु चार वर्षीय कोर्स बी0एल0एड्0 (बी0ए0+बी0टी0सी) जो शिक्षक शिक्षण पाठ्यक्रम के तहत राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एन.सी.टी.ई) से मान्यता प्राप्त व जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय से अस्थाई सम्बद्धता प्राप्त, सन् 2020 से संचालित है जिसके स्थायी मान्यता हेतु विश्वविद्यालय द्वारा नामित प्रो0 संजय कुमार सरोज (श्री मु0म0टा0पी0जी0कालेज, कलिया), प्रो0 करुणाकर राम त्रिपाठी (दी0द0उ0गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर) व प्रो0 बी0के0त्रिपाठी क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, वाराणसी ने दिनांक 13.04. 2024 को महाविद्यालय के भूमि, भवन, अवस्थापना सुविधाएं प्रयोगशालाएं, कक्षाएं तथा पुस्तकालय इत्यादि का गहन निरीक्षण कर स्थायी सम्बद्धता हेतु सहर्ष स्वीकृति विश्वविद्यालय को प्रेषित की।

रेशे वस्त्र विज्ञान की नींव (गृहविज्ञान विभाग)

स्नातकोत्तर महाविद्यालय बॉसडीह (गृहविज्ञान विभाग) द्वार दिनांक 17.04.2024 व 18.04.2024 को विभिन्न प्रकार के रेशों/तन्तुओ की पहचान व प्रबन्धन की विशेषताओं की चर्चा की गई। प्रवक्ता डॉ0 शिल्पी श्रीवास्तव ने बताया कि मानव सभ्यता के साथ–साथ ही वस्त्र/परिधान के चलन का प्रारम्भ हुआ। वस्त्र का समुचित प्रयोग मानव व समाज की सभ्यता का प्रतीक बनता चला गया। क्योंकि वस्त्र.ों का निर्माण रेशों/तन्तुओं द्वारा होता है अतः रेशों का ज्ञान आज के समय में आवश्यक माना जाने लगा है। ये रेशे प्राकृतिक व क्रत्रिम दोनो प्रकार के उत्पादित हो रहे हैं अतः मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से और क्रत्रिम तन्तुओं से होने वाली संवेदनशीलता के कारण, आज की गृहणी को इसकी जानकारी रखना अति आवश्यक हो गया है। श्रीमती सुनीता कश्यप ने बताया कि विभिन्न प्रकार के रेशे जो विभिन्न प्रकार के मौसम व कार्यों के अनुसार शरीर की सुन्दरता व सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं, का सुक्ष्मदर्शी परीक्षण छात्राओं द्वारा करा उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया। सामान्य रुप से छात्राओं ने कपास, ऊन, रेशम व क्रत्रिम रेशों का परीक्षण किया और उनकी संरचनाओं व विशेषताओं पर समुह चर्चा किया।

प्रशिक्षु शिक्षकों की दक्षता

प्रशिक्षु शिक्षकों (बी0एड्0 चतुर्थ सेमे0) का सत्रावसन करते हुए बी0एड्0 विभाग के प्राध्यापकों ने शैक्षणिक कौशल और व्यवहारिक कौशल के सामंजस्य की चर्चा करते हुए प्रशिक्षुओं को भारतीय संविधान के प्रावधानों व मौलिक कर्तव्यों के अभ्यास पर जोर देते रहने का पाठ पढ़ाया। विभागाध्यक्ष डॉ0 कमलेश रवि ने पर्यावरण प्रबन्धन और शिक्षा में भारतीय मूल्यों की भुमिका की चर्चा करते हुए भारतीय समाज में पर्यावरण का महत्व, शिक्षण संस्थानों से अपेक्षाएं, पर्यावरण के आयाम, प्रदूषण की रोकथाम तथा पर्यावरण की समस्या के प्रति आमजनों को जागृत करने मे शिक्षक की भूमिका विषय पर अपने विचार रखे।

श्री जुबेर आलम ने लिंग आधारित भेदभाव की संभावना वाले कक्षा की स्थितियों की व्याख्या करते हुए लिंग सम्बन्धी भेदभावपूर्ण प्रथाओं तथा नीति दस्तावेजों मे इसके प्रति अपनाए गये रुख की विस्तुत व्याख्या की।

श्री रंजीत कुमार ने स्कूलों में मार्गदर्शन कार्यक्रमों की योजना बनाते हुए उन्हें व्यवस्थित करने, परामर्श सत्रों का आयोजन करने तथा इसके लिए अत्याधुनिक तकनीक का प्रयोग कर बच्चों में नवाचार को विकसित करने का तरीका बताया।

अन्त में श्री आर0के0पाठक ने स्कूली शिक्षा में प्रबंधकीय चुिताओं के विभिन्न पहलुओं के निहितार्थ योजना बनाने, व्यवस्थित और नियंत्रित करने और उनका मूल्यांकन कर, बेहतर प्रबन्धन के लिए स्वाट विश्लेषण मे दक्षता विकसित करने पर जोर दिया।

भयादोहन : विश्व शांति हेतु आवश्यक

सैन्य विचारक कैप्टन लिडिल हार्ट के ''भयादोहन'' की व्याख्या करते हुए डॉ0 फिरोज खान ने आज के वैश्विक परिवेश में इसके महत्व को अति आवश्यक बताया। डॉ0 खान ने बतया कि ''भय उत्पन्न कर अपनी बातों को शत्रु से मनवाने की क्षमता ही भयादोहन कहलाती है। भयादोहन की विश्वसनीयता तभी संभव होती है जब उस राष्ट्र के पास संहारक क्षमता मौजूद रहती है। इसका उदाहरण द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका द्वारा अमेरिका द्वारा जापान के के दो प्रमुख औद्योगिक नगर हिरोशिमा और नागासकी पर 6 व 9 अगस्त 1945 को आणविक वर्षा किये जाने के उपरान्त भयादोहन से लिया जा सकता है।

माना जाता है कि राष्ट्रों की आवाज मजबूत अर्थव्यवस्था के कारण ही वैश्विक पटल पर गूंजती है। वैश्विक मंचों पर भारत की स्थिति निश्चित रुप से मजबूत होती जा रहरी है। विश्व शांति की स्थापना में हथियारों की अहम भुमिका रही है। प्रत्येक आणविक शक्ति सम्पन्न राष्ट्र नाभिकीय हथियारों का निर्माण तो काफी किया परन्तु द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अभी तक इसका प्रयोग किसी भी राष्ट्र के द्वारा नही किया गया।